Deepotsav 2024 Celebrations: दीपोत्सव 2024 समारोहः

- Ayodhya made history by setting two Guinness World Records on 30th October evening. In a dazzling spectacle, the Uttar Pradesh Tourism Department, alongside the district administration, illuminated the banks of the Saryu River with over 25 lakh diyas (earthen lamps), creating the world's largest display of oil lamps. 30 अक्टूबर की शाम अयोध्या ने दो गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाकर इतिहास रच दिया। एक चमकदार दृश्य में, उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग ने, जिला प्रशासन के साथ, सरयू नदी के तटों को 25 लाख से अधिक दीयों (मिट्टी के दीपक) से रोशन किया, जिससे दुनिया में तेल के लैंप का सबसे बड़ा प्रदर्शन हुआ।

NEOM Project : Saudi Arabia NEOM परियोजनाः सऊदी अरब

- Saudi Arabia has taken a significant step toward realizing its ambitious NEOM project by opening its first luxury tourism site, an island called Sindalah. सऊदी अरब ने सिंदलाह नामक द्वीप पर अपना पहला लक्जरी पर्यटन स्थल खोलकर अपनी महत्वाकांक्षी NEOM परियोजना को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है।
- NEOM seeks to establish Saudi Arabia as a global luxury tourism and investment hub while advancing sustainable, high-tech urban development. छम्ब्ड टिकाऊ, उच्च तकनीक वाले शहरी विकास को आगे बढ़ाते हुए सऊदी अरब को वैश्विक लक्जरी पर्यटन और निवेश केंद्र के रूप में स्थापित करना चाहता है।

NEOM Project : Saudi Arabia NEOM परियोजनाः सऊदी अरब

- It includes innovative concepts like The Line, twin skyscrapers spanning 170 km, a floating industrial complex called Oxagon, and Trojena, a mountainous skiing and leisure area. इसमें द लाइन, 170 किमी तक फैली जुड़वां गगनचुंबी इमारतें, ऑक्सागन नामक एक तैरता हुआ औद्योगिक परिसर और एक पहाड़ी स्कीइंग और अवकाश क्षेत्र ट्रोजेना जैसी नवीन अवधारणाएं शामिल हैं।
- The first open site, Sindalah is a 840,000 square-meter luxury island aiming to attract global tourists and investors with high-end facilities, yachting berths, and a capacity of up to 2,400 guests daily by 2028.
  पहली खुली साइट, सिंदालाह 840,000 वर्ग मीटर का एक लक्जरी द्वीप है, जिसका लक्ष्य 2028 तक उच्च–स्तरीय सुविधाओं, नौकायन बर्थ और प्रतिदिन 2,400 मेहमानों की क्षमता के साथ वैश्विक पर्यटकों और निवेशकों को आकर्षित करना है।

Konark Wheels : Replicas Installed At Rashtrapati Bhavan Cultural Centre and Amrit Udyan कोणार्क व्हील्सः राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र और अमृत उद्यान में स्थापित प्रतिकृतियां

- Four replicas of the Konark wheels, made of sandstone, have been installed at Rashtrapati Bhavan Cultural Centre and Amrit Udyan.
  बलुआ पत्थर से बने कोणार्क पहियों की चार प्रतिकृतियां राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र और अमृत उद्यान में स्थापित की गई हैं।
- This initiative aims to highlight India's cultural heritage, presenting visitors with a glimpse of traditional and historical artistry associated with the 13th-century Konark Sun Temple in Odisha.
  इस पहल का उद्देश्य भारत की सांस्कृतिक विरासत को उजागर करना है, जिससे आगंतुकों को ओडिशा में 13वीं शताब्दी के कोणार्क सूर्य मंदिर से जुड़ी पारंपरिक और ऐतिहासिक कलात्मकता की झलक मिल सके।

Konark Wheels : Replicas Installed At Rashtrapati Bhavan Cultural Centre and Amrit Udyan

- The Konark wheel, built in the 13th century, represents time (Kalachakra), progression, and democracy. 13वीं शताब्दी में निर्मित कोणार्क चक्र समय (कालचक्र), प्रगति और लोकतंत्र का प्रतिनिधित्व करता है।
- With 24 spokes, it embodies ancient wisdom and architectural mastery, symbolized in the national flag. 24 तीलियों के साथ, यह प्राचीन ज्ञान और वास्तुशिल्प निपुणता का प्रतीक है, जो राष्ट्रीय ध्वज में दर्शाया गया है।
- The wheel served as a sundial in the temple, symbolizing the passage of time and India's commitment to progress and resilience. पहिया मंदिर में धूपघड़ी के रूप में काम करता था, जो समय बीतने और प्रगति और लचीलेपन के प्रति भारत की प्रतिबद्धता का प्रतीक था।

Simhachalam Temple : In News सिंहाचलम मंदिरः समाचार में

- During recent conservation efforts, epigraphists from the Archaeological Survey of India (ASI) uncovered a Telugu inscription on the wall above the statue of Lord Hanuman at the 13th-century Simhachalam temple.
  हाल के संरक्षण प्रयासों के दौरान, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के पुरालेखविदों ने 13वीं शताब्दी के सिम्हाचलम मंदिर में भगवान हनुमान की मूर्ति के ऊपर की दीवार पर एक तेलुगु शिलालेख खोजा।
- Simhachalam Temple, originally known as Varaha Lakshmi Narasimha Temple, is a Hindu temple located in Visakhapatnam, Andhra Pradesh.
  सिम्हाचलम मंदिर, जिसे मूल रूप से वराह लक्ष्मी नरसिम्हा मंदिर के नाम से जाना जाता है, आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम में स्थित एक हिंदू मंदिर है।
- The Present temple was built by **Eastern Ganga king Narasingha Deva I** in the 13th century and consecrated by his son Bhanudeva I in 1268 CE.

Simhachalam Temple : In News सिंहाचलम मंदिरः समाचार में

- It is dedicated to the incarnation (avatar) of Vishnu known as Narasimha (the man-lion). यह विष्णु के अवतार (अवतार) को समर्पित है जिसे नरसिम्हा (मानव–शेर) के नाम से जाना जाता है।
- The temple's architecture is a blend of Kalinga and Dravidian styles, with its main sanctum adorned with intricate carvings and sculptures. मंदिर की वास्तुकला कलिंग और द्रविड़ शैलियों का मिश्रण है, जिसका मुख्य गर्भगृह जटिल नक्काशी और मूर्तियों से सुसज्जित है।
- The presiding deity, Lord Narasimha, is depicted with a human torso and a lion's face, exuding a sense of divine power and grace. पीठासीन देवता, भगवान नरसिम्हा को एक मानव धड़ और एक शेर के चेहरे के साथ चित्रित किया गया है, जो दिव्य शक्ति और अनुग्रह की भावना को दर्शाता है।

Simhachalam Temple : In News सिंहाचलम मंदिरः समाचार में

- It boasts of a beautiful stone chariot drawn by horses.
  इसमें घोड़ों द्वारा खींचा जाने वाला एक सुंदर पत्थर का रथ है।
- The Kalyana Mandapa within the temple has 16 pillars with bas reliefs depicting the incarnations of Vishnu.
  मंदिर के भीतर कल्याण मंडप में 16 स्तंभ हैं जिनमें विष्णु के अवतारों को दर्शाया गया है।
- The outer walls of the sanctum depict images of a royal personality (said to be King Narasimha) in various postures. गर्भगृह की बाहरी दीवारों पर विभिन्न मुद्राओं में एक शाही व्यक्तित्व (जिन्हें राजा नरसिम्हा कहा जाता है) की छवियां चित्रित हैं।

Vigilance Awareness Week 2024: सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024:

- Vigilance Awareness Week 2024 is currently underway. It runs from October 28 to November 3, 2024. This year's theme is Culture of Integrity for Nation's Prosperity. The Central Vigilance Commissioner, Shri Praveen Kumar Srivastava, and Vigilance Commissioner, Shri A.S. Rajeev, administered the integrity pledge to officials at Satarkata Bhawan, New Delhi, on November 2, 2024. सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024 अभी चल रहा है। यह 28 अक्टूबर से 3 नवंबर, 2024 तक चलता है। इस वर्ष की थीम राष्ट्र की समृद्धि के लिए अखंडता की संस्कृति है। केंद्रीय सतर्कता आयुक्त, श्री प्रवीण कुमार श्रीवास्तव और सतर्कता आयुक्त, श्री ए.एस. राजीव ने 2 नवंबर, 2024 को सतारकता भवन, नई दिल्ली में अधिकारियों को अखंडता की शपथ दिलाई।

Bali Padyami festival: बाली पद्यामी उत्सवः

- Karnataka is celebrating the Bali Padyami festival (Bali Pratipada) on marking the fourth day of Deepavali. This festival commemorates the return of the Asura king, Bali Chakravarty, from Pathala Loka to Bhuloka, a journey made possible by the boon granted to him by Lord Vishnu during his Vamana Avatar.

  कर्नाटक दीपावली के चौथे दिन बाली पद्यामी उत्सव (बाली प्रतिपदा) मना रहा है। यह त्योहार असुर राजा, बाली चक्रवर्ती की पथला लोक से भूलोक तक वापसी की याद दिलाता है, यह यात्रा भगवान विष्णु द्वारा उनके वामन अवतार के दौरान दिए गए वरदान से संभव हुई थी।

Tumaini Festival: तुमैनी महोत्सवः

- The Tumaini Festival, an annual event held since 2014 at Malawi's Dzaleka Refugee Camp, celebrates the resilience and culture of refugees through music, art, and crafts. मलावी के डजालेका शरणार्थी शिविर में 2014 से आयोजित एक वार्षिक कार्यक्रम, तुमैनी महोत्सव, संगीत, कला और शिल्प के माध्यम से शरणार्थियों के लचीलेपन और संस्कृति का जश्न मनाता है।
- Tumaini Festival founded in 2014, by Menes La Plume, a Congolese poet. तुमैनी महोत्सव की स्थापना 2014 में कांगो के कवि मेनेस ला प्लूम ने की थी।

Tumaini Festival: तुमैनी महोत्सवः

- Purpose is to create a unique platform for cultural exchange, showcasing resilience through music, art, and crafts. इसका उद्देश्य संगीत, कला और शिल्प के माध्यम से लचीलापन प्रदर्शित करते हुए सांस्कृतिक आदान–प्रदान के लिए एक अनूठा मंच बनाना है।
- To Builds connections and breaks stereotypes by humanizing the refugee experience, allowing people to share common experiences and celebrate cultural diversity. शरणार्थी अनुभव को मानवीय बनाकर संबंध बनाना और रूढ़ियों को तोड़ना, लोगों को सामान्य अनुभव साझा करने और सांस्कृतिक विविधता का जश्न मनाने की अनुमति देना।

Tumaini Festival: तुमैनी महोत्सवः

- 2024 Event: Organized by the camp's youth, many of whom were born in the camp, reflecting local pride and ownership. 2024 कार्यक्रमः शिविर के युवाओं द्वारा आयोजित, जिनमें से कई शिविर में पैदा हुए थे, जो स्थानीय गौरव और स्वामित्व को दर्शाते हैं।
- Dzaleka Refugee Camp is located Near Lilongwe, Malawi, originally established on a former prison site. डेजलेका शरणार्थी शिविर मलावी के लिलोंग्वे के पास स्थित है, जो मूल रूप से एक पूर्व जेल स्थल पर स्थापित किया गया था।
- Established in 1994, following regional conflicts, particularly in Africa's Great Lakes region. क्षेत्रीय संघर्षों के बाद, विशेष रूप से अफ्रीका के ग्रेट लेक्स क्षेत्र में, 1994 में स्थापित किया गया।

First Asian Buddhist Summit : India To Host

पहला एशियाई बौद्ध शिखर सम्मेलनः भारत करेगा मेजबानी

- India is set to host the first Asian Buddhist Summit (ABS) in New Delhi on November 5-6, 2024, organized by the Ministry of Culture in collaboration with the International Buddhist Confederation (IBC).
  भारत 5–6 नवंबर, 2024 को नई दिल्ली में पहले एशियाई बौद्ध शिखर सम्मेलन (एबीएस) की मेजबानी करने के लिए तैयार है, जो अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (आईबीसी) के सहयोग से संस्कृति मंत्रालय द्वारा आयोजित किया जाएगा।
- Initiated by the Government of India and IBC to promote Buddhist heritage and interfaith dialogue across Asia for the first time.
  पहली बार पूरे एशिया में बौद्ध विरासत और अंतरधार्मिक संवाद को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार और आईबीसी द्वारा पहल की गई।

First Asian Buddhist Summit : India To Host

- Ministry: Organized by the Ministry of Culture, Government of India.
  मंत्रालयः भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा आयोजित।
- Location: Bharat Mandapam, New Delhi, India.
  स्थानः भारत मंडपम, नई दिल्ली, भारत।
- 2024 theme: "Role of Buddha Dhamma in Strengthening Asia."
  2024 थीमः ''एशिया को मजबूत बनाने में बुद्ध धम्म की भूमिका।''
- Aim is to celebrate the cultural and spiritual heritage of Buddhism in Asia, fostering dialogue and collaboration on challenges faced by the Buddhist community. इसका उद्देश्य एशिया में बौद्ध धर्म की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत का जश्न मनाना, बौद्ध समुदाय के सामने आने वाली चुनौतियों पर बातचीत और सहयोग को बढ़ावा देना है।

Kalka-Shimla Railway : In News कालका–शिमला रेलवेः खबरों में

- Himachal Pradesh Chief Minister recently urged the Central government to explore the possibility of running trains on the Kalka-Shimla narrow-gauge railway, a UNESCO world heritage site, on green hydrogen.
  हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री ने हाल ही में केंद्र सरकार से यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल कालका–शिमला नैरो–गेज रेलवे पर हरित हाइड्रोजन पर ट्रेनें चलाने की संभावना तलाशने का आग्रह किया।
- It is a narrow-gauge railway in North India which traverses a mostly mountainous route from Kalka (Haryana) to Shimla (Himachal Pradesh).
  यह उत्तर भारत में एक नैरो–गेज रेलवे है जो कालका (हरियाणा) से शिमला (हिमाचल प्रदेश) तक ज्यादातर पहाड़ी मार्ग को पार करती है।

Kalka-Shimla Railway : In News कालका–शिमला रेलवेः खबरों में

- The railway was built in 1898 to connect Shimla, the summer capital of British India, with the rest of the Indian rail system.
  ब्रिटिश भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी शिमला को शेष भारतीय रेल प्रणाली से जोड़ने के लिए 1898 में रेलवे का निर्माण किया गया था।
- The project's chief engineer was S. Harington.
  परियोजना के मुख्य अभियंता एस. हैरिंगटन थे।
- The 96 km. long, single-track line, often called the toy train line, was opened in 1903.
  96 कि.मी. लंबी, सिंगल–ट्रैक लाइन, जिसे अक्सर टॉय ट्रेन लाइन कहा जाता है, 1903 में खोली गई थी।

Kalka-Shimla Railway : In News कालका–शिमला रेलवेः खबरों में

- It passes through 18 stations, 102 tunnels, and over 850 bridges.
  यह 18 स्टेशनों, 102 सुरंगों और 850 से अधिक पुलों से होकर गुजरती है।
- Total change of altitude: From Kalka (655 meters) to Shimla (2,076 meters).
  ऊंचाई में कुल परिवर्तनः कालका (655 मीटर) से शिमला (2,076 मीटर) तक।
- The world's highest multi-arch gallery bridge at Kanoh and the world's longest tunnel at Barog (at the time of construction) of the KSR were the testimony of the brilliant engineering skills applied to make this railway line.
  कनोह में दुनिया का सबसे ऊंचा मल्टी–आर्क गैलरी पुल और केएसआर के बड़ोग (निर्माण के समय) में दुनिया की सबसे लंबी सुरंग इस रेलवे लाइन को बनाने के लिए लागू किए गए शानदार इंजीनियरिंग कौशल का प्रमाण थी।

Kalka-Shimla Railway : In News कालका–शिमला रेलवेः खबरों में

- It was a UNESCO World Heritage Site in 2008.
  यह 2008 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल था।
- The rail network holds the Guinness Book of World Records for its 96-kilometers steepest rise in altitude with a crossover of 800 bridges and viaducts. रेल नेटवर्क ने 800 पुलों और पुलों के क्रॉसओवर के साथ 96 किलोमीटर की सबसे ऊंची ऊंचाई के लिए गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में अपना नाम दर्ज कराया है।
- Did you know that among these railway stations, four have been accorded UNESCO World Heritage status? Darjeeling Himalayan Railway (1999), Nilgiri Mountain Railway (2005), Kalka Shimla Railway (2008) and Chhatrapati Shivaji Terminus, Mumbai (2004) have been honoured with heritage status.13 Oct 2022.

Maha Kumbh Mela 2025: महाकुंभ मेला 2025:

- The Maha Kumbh Mela 2025 in Prayagraj will be held from January 13 to February 26, drawing millions of pilgrims to perform sacred rituals and seek spiritual liberation प्रयागराज में महाकुंभ मेला 2025 13 जनवरी से 26 फरवरी तक आयोजित किया जाएगा, जिसमें लाखों तीर्थयात्री पवित्र अनुष्ठान करने और आध्यात्मिक मुक्ति पाने के लिए आएंगे।
- Maha Kumbh Mela rooted in Hindu mythology, the Maha Kumbh Mela began as a pilgrimage tradition thousands of years ago, with early references in Maurya and Gupta periods (4th century BCE to 6th century CE). महाकुंभ मेला हिंदू पौराणिक कथाओं में निहित है, महाकुंभ मेला हजारों साल पहले एक तीर्थयात्रा परंपरा के रूप में शुरू हुआ था, जिसका शुरुआती संदर्भ मौर्य और गुप्त काल (चौथी शताब्दी ईसा पूर्व से छठी शताब्दी ईस्वी) में मिलता है।

Maha Kumbh Mela 2025: महाकुंभ मेला 2025:

- Occurs every 12 years, rotating between four locations — Prayagraj, Haridwar, Ujjain, and Nashik — each with its sacred rivers: Ganges, Yamuna, Shipra, and Godavari. यह हर 12 साल में होता है, चार स्थानों – प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक – के बीच घूमता है, जिनमें से प्रत्येक की अपनी पवित्र नदियाँ हैं: गंगा, यमुना, शिप्रा और गोदावरी।
- Prayagraj hosts the Mela at the Triveni Sangam, the confluence of the Ganges, Yamuna, and the mythical Sarasvati, considered highly auspicious for spiritual cleansing.
  प्रयागराज त्रिवेणी संगम पर मेले का आयोजन करता है, जो गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती का संगम है, जिसे आध्यात्मिक सफाई के लिए अत्यधिक शुभ माना जाता है।

Maha Kumbh Mela 2025: महाकुंभ मेला 2025:

- Recognized as a UNESCO intangible cultural heritage, it represents a quest for spiritual purity, unity, and self-realization, attracting diverse pilgrims, sadhus, and international seekers.
  यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता प्राप्त, यह आध्यात्मिक शुद्धता, एकता और आत्म–प्राप्ति की खोज का प्रतिनिधित्व करता है, जो विविध तीर्थयात्रियों, साधुओं और अंतर्राष्ट्रीय साधकों को आकर्षित करता है।

Bidar Fort : Waqf Board Identified As Its Property

बीदर किला: वक्फ बोर्ड ने अपनी संपत्ति के रूप में पहचान की

- The Waqf Board identified 17 monuments inside the historic Bidar Fort in Karnataka as its property. वक्फ बोर्ड ने कर्नाटक के ऐतिहासिक बीदर किले के अंदर 17 स्मारकों को अपनी संपत्ति के रूप में पहचाना।
- Bidar Fort is situated in Bidar City on the northern plateau of Karnataka, India. बीदर किला भारत के कर्नाटक के उत्तरी पठार पर बीदर शहर में स्थित है।

Bidar Fort : Waqf Board Identified As Its Property

- The history of Bidar Fort dates back over 500 years, starting with the reign of the Western Chalukya dynasty. बीदर किले का इतिहास 500 साल से अधिक पुराना है, जो पश्चिमी चालुक्य राजवंश के शासनकाल से शुरू होता है।
- Sultan Ahmed Shah Wali of the Bahmani dynasty made Bidar his capital in 1430 and renovated it as an impressive citadel. बहमनी वंश के सुल्तान अहमद शाह वली ने 1430 में बीदर को अपनी राजधानी बनाया और इसे एक प्रभावशाली गढ़ के रूप में पुनर्निर्मित किया।
- It had been built of trap rock. Stone and mortar were used to build the fort walls. इसका निर्माण ट्रैप रॉक से किया गया था। किले की दीवारों के निर्माण में पत्थर और मोर्टार का उपयोग किया गया था।

Bidar Fort : Waqf Board Identified As Its Property

- The entrance gate has a lofty dome, the interior of which had been painted in bright colours. प्रवेश द्वार पर एक ऊंचा गुंबद है, जिसके अंदरूनी हिस्से को चमकीले रंगों से रंगा गया है।
- Bidar Fort includes: बीदर किले में शामिल हैं:
  - Islamic and Persian architecture, इस्लामी और फारसी वास्तुकला,
  - Seven main entrances, सात मुख्य प्रवेश द्वार,
  - 37 bastions (Balcony structures extending from the fort) of octagonal shape with metal-shielded cannons, धातु–ढाल वाली तोपों के साथ अष्टकोणीय आकार के 37 बुर्ज (किले से फैली बालकनी संरचनाएं),
  - Mosques and mahals, मस्जिदें और महल,
  - Thirty-plus Islamic monuments. तीस से अधिक इस्लामी स्मारक।

Bidar Fort : Waqf Board Identified As Its Property

- The Bahmani Kingdom rose to power after the Turkish Governor Ala-ud-din Hassan Bahman Shan established an independent empire by revolting against the Sultan of Delhi Sultanate, Muhammad Bin Tughlaq in 1347.
  1347 में तुर्की के गवर्नर अलाउद्दीन हसन बहमन शान ने दिल्ली सल्तनत के सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के खिलाफ विद्रोह करके एक स्वतंत्र साम्राज्य की स्थापना के बाद बहमनी साम्राज्य सत्ता में आया।

Al-Natah : Ancient Town Uncovered By Archaeologists

अल–नताः पुरातत्वविदों द्वारा खोजा गया प्राचीन शहर

- Archaeologists have uncovered a 4,000-year-old fortified town in Saudi Arabia, illustrating the gradual shift from nomadic to urban lifestyles.
  पुरातत्वविदों ने सऊदी अरब में 4,000 साल पुराने एक किलेबंद शहर का पता लगाया है, जो खानाबदोश से शहरी जीवनशैली में क्रमिक बदलाव को दर्शाता है।
- French archaeologist Guillaume Charloux and his crew led the discovery.
  फ्रांसीसी पुरातत्वविद् गुइल्यूम चार्लोक्स और उनके दल ने इस खोज का नेतृत्व किया।

Al-Natah : Ancient Town Uncovered By Archaeologists

अल–नताः पुरातत्वविदों द्वारा खोजा गया प्राचीन शहर

- Excavation at the Khaybar oasis has found that a sophisticated Bronze Age town existed between 2400 and 1500 BCE.
  खैबर नखलिस्तान की खुदाई से पता चला है कि एक परिष्कृत कांस्य युग का शहर 2400 और 1500 ईसा पूर्व के बीच अस्तित्व में था।
- The town reveals- The presence of an organised settlement in an era previously believed to be dominated by nomadic pastoral societies.
  शहर से पता चलता है– एक ऐसे युग में एक संगठित बस्ती की उपस्थिति, जिसे पहले खानाबदोश देहाती समाजों का प्रभुत्व माना जाता था।

Al-Natah : Ancient Town Uncovered By Archaeologists

अल–नताः पुरातत्वविदों द्वारा खोजा गया प्राचीन शहर

- It is enclosed by a 14.5-kilometre wall and occupies a 2.6-hectare area.
  यह 14.5 किलोमीटर की दीवार से घिरा हुआ है और 2.6 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है।
- It housed up to 500 residents who lived in multi-story dwellings.
  इसमें 500 निवासी रहते थे जो बहुमंजिला आवासों में रहते थे।
- The town was likely a centre for agricultural production and trade, sustaining a cooperative society in the otherwise arid environment.
  यह शहर संभवतः कृषि उत्पादन और व्यापार का केंद्र था, जो अन्यथा शुष्क वातावरण में एक सहकारी समिति को बनाए रखता था।

Al-Natah : Ancient Town Uncovered By Archaeologists

अल–नताः पुरातत्वविदों द्वारा खोजा गया प्राचीन शहर

- Residents of Al-Natah lived in rectangular dwellings, constructed from materials such as stone and mudbrick, with narrow paths connecting the various structures.
  अल–नताह के निवासी आयताकार आवासों में रहते थे, जो पत्थर और मिट्टी की ईंट जैसी सामग्रियों से निर्मित होते थे, जिसमें विभिन्न संरचनाओं को जोड़ने वाले संकीर्ण रास्ते होते थे।
- The town's layout included burial sites, with some graves and tiered towers marking higher social status.
  शहर के लेआउट में दफन स्थल शामिल थे, जिसमें कुछ कब्रें और ऊंची सामाजिक स्थिति को दर्शाने वाले टॉवर थे।

Al-Natah : Ancient Town Uncovered By Archaeologists

अल–नताः पुरातत्वविदों द्वारा खोजा गया प्राचीन शहर

- A similar town in southern Saudi Arabia, Al Faw, was given UNESCO World Heritage Site status this year.
  दक्षिणी सऊदी अरब के एक ऐसे ही शहर, अल फॉ को इस वर्ष यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल का दर्जा दिया गया था।

Menhir : In News मेनहिरः समाचार में

- An Iron Age menhir, a memorial pillar locally known as ‘Niluvu Rayi’ found in Kamasanpalli village of Nagarkurnool district in Telangana, faces neglect.
  तेलंगाना में नागरकर्नूल जिले के कामसनपल्ली गांव में पाया गया लौह युग का मेनहिर, एक स्मारक स्तंभ जिसे स्थानीय रूप से ‘निलुवु राय’ के नाम से जाना जाता है, उपेक्षा का सामना कर रहा है।
- A menhir is a large upright standing stone.
  मेनहिर एक बड़ा सीधा खड़ा पत्थर है।

Menhir : In News मेनहिरः समाचार में

- Menhirs may be found singly as monoliths, or as part of a group of similar stones. मेन्हीर अकेले मोनोलिथ के रूप में, या समान पत्थरों के समूह के हिस्से के रूप में पाए जा सकते हैं।
- They are widely distributed across Europe, Africa, and Asia, but are most numerous in Western Europe. वे यूरोप, अफ्रीका और एशिया में व्यापक रूप से वितरित हैं, लेकिन पश्चिमी यूरोप में सबसे अधिक संख्या में हैं।
- Their size can vary considerably; but their shape is generally uneven and squared, often tapering towards the top. उनका आकार काफी भिन्न हो सकता हैय लेकिन उनका आकार आम तौर पर असमान और चौकोर होता है, जो अक्सर ऊपर की ओर पतला होता है।

Menhir : In News मेनहिरः समाचार में

- Often menhirs were placed together, forming circles, semicircles, or vast ellipses. अक्सर मेन्हीर को एक साथ रखा जाता था, जिससे वृत्त, अर्धवृत्त या विशाल दीर्घवृत्त बनते थे।
- Megalithic menhirs were also placed in several parallel rows, called alignments. The most famous of these are the Carnac, France, alignments, which include 2,935 menhirs. मेगालिथिक मेन्हीर को कई समानांतर पंक्तियों में भी रखा गया था, जिन्हें संरेखण कहा जाता था। इनमें से सबसे प्रसिद्ध कार्नाक, फ्रांस, संरेखण हैं, जिनमें 2,935 मेनहिर शामिल हैं।
- They are sometimes engraved with abstract forms (line, spiral) or with objects' images like axes. उन्हें कभी–कभी अमूर्त रूपों (रेखा, सर्पिल) या अक्ष जैसी वस्तुओं की छवियों के साथ उकेरा जाता है।

Menhir : In News मेनहिरः समाचार में

- Identifying the uses of menhirs remains speculation. However, it is likely that many uses involved fertility rites and seasonal cycles.
  मेनहिर के उपयोग की पहचान करना अटकलें बनी हुई हैं। हालाँकि, यह संभव है कि कई उपयोगों में प्रजनन संस्कार और मौसमी चक्र शामिल हों।

Uttarakhand CM Inaugurates Jauljibi Mela 2024 in Pithoragarh:

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री ने पिथौरागढ़ में जौलजीबी मेला 2024 का उद्घाटन किया:

- Uttarakhand CM Pushkar Singh Dhami inaugurated the Jauljibi Mela 2024 in Pithoragarh, calling it an "invaluable heritage" of the state. The mela, historically significant for promoting harmony between India, Tibet, Nepal, and neighboring regions, plays a vital role in strengthening both economic and cultural ties. During the event, Dhami also launched 18 development projects worth ₹64.47 crores, with significant investments in rural and agricultural sectors. उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने पिथोरागढ़ में जौलजीबी मेला 2024 का उद्घाटन किया और इसे राज्य की ''अमूल्य विरासत'' बताया। भारत, तिब्बत, नेपाल और पड़ोसी क्षेत्रों के बीच सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण यह मेला आर्थिक और सांस्कृतिक दोनों संबंधों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आयोजन के दौरान, धामी ने ग्रामीण और कृषि क्षेत्रों में महत्वपूर्ण निवेश के साथ ₹64.47 करोड़ की 18 विकास परियोजनाएं भी लॉन्च कीं।

India's Cooperative Movement: भारत का सहकारी आंदोलनः

- India's cooperative movement, rooted in the ethos of Vasudhaiva Kutumbakam ("the world is one family"), has played a transformative role in fostering inclusive growth, empowering marginalized communities, and driving rural development. Cooperative societies are voluntary organizations where individuals with shared interests collaborate to achieve common economic goals. They operate on principles of self-help, mutual assistance, and prioritizing community welfare over profit. Members pool resources, collectively use them, and derive shared benefits.वसुधैव कुटुंबकम (''दुनिया एक परिवार है'') के लोकाचार में निहित भारत के सहकारी आंदोलन ने समावेशी विकास को बढ़ावा देने, हाशिए पर रहने वाले समुदायों को सशक्त बनाने और ग्रामीण विकास को आगे बढ़ाने में परिवर्तनकारी भूमिका निभाई है। सहकारी समितियाँ स्वैच्छिक संगठन हैं जहाँ साझा हितों वाले व्यक्ति सामान्य आर्थिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सहयोग करते हैं। वे स्व–सहायता, पारस्परिक सहायता और लाभ से अधिक सामुदायिक कल्याण को प्राथमिकता देने के सिद्धांतों पर काम करते हैं। सदस्य संसाधनों को एकत्रित करते हैं, सामूहिक रूप से उनका उपयोग करते हैं और साझा लाभ प्राप्त करते हैं।

Dhudmaras Village: धूड़मारस गांव:

- Dhudmaras, a village in Chhattisgarh's Bastar district, has been selected to participate in the Best Tourism Village Upgrade Programme (BTVUP) under the United Nations Tourism for Rural Development Programme (UNTRDP) by the UN World Tourism Organisation (UNWTO). This recognition marks its potential as a hub for eco-tourism and sustainable development.
  संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (यूएनडब्ल्यूटीओ) द्वारा संयुक्त राष्ट्र ग्रामीण विकास कार्यक्रम (यूएनटीआरडीपी) के तहत सर्वश्रेष्ठ पर्यटन ग्राम उन्नयन कार्यक्रम (बीटीवीयूपी) में भाग लेने के लिए छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले के एक गांव धुड़मारस को चुना गया है। यह मान्यता इको–पर्यटन और सतत विकास के केंद्र के रूप में इसकी क्षमता को चिह्नित करती है।

Narsapur lace Craft : GI Tag नरसापुर फीता शिल्पः जीआई टैग

- The famous Narasapuram lace craft has bagged the prestigious Geographical Indication (GI) tag. प्रसिद्ध नरसापुरम फीता शिल्प को प्रतिष्ठित भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग मिला है।
- Narsapur is situated on the bank of Godavari River in the state of Andhra Pradesh. नरसापुर आंध्र प्रदेश राज्य में गोदावरी नदी के तट पर स्थित है।

Narsapur lace Craft : GI Tag नरसापुर फीता शिल्पः जीआई टैग

- It is believed that the women of the farming community of this region started creating highly attractive artefacts from colourful lace, about 150 years ago. ऐसा माना जाता है कि इस क्षेत्र के कृषक समुदाय की महिलाओं ने लगभग 150 साल पहले रंगीन फीते से अत्यधिक आकर्षक कलाकृतियाँ बनाना शुरू किया था।
- The craft has survived the Indian famine (1899) and the Great Depression (1929). By the early 1900s, above 2,000 women were involved in the craft in the Godavari region. यह शिल्प भारतीय अकाल (1899) और महामंदी (1929) से बच गया है। 1900 के दशक की शुरुआत तक, गोदावरी क्षेत्र में 2,000 से अधिक महिलाएँ इस शिल्प में शामिल थीं।

Narsapur lace Craft : GI Tag नरसापुर फीता शिल्पः जीआई टैग

- The lace work is done using thin threads and these are again woven with thin crochet needles of varying sizes.
  फीते का काम पतले धागों का उपयोग करके किया जाता है और इन्हें फिर से अलग–अलग आकार की पतली क्रोकेट सुइयों से बुना जाता है।
- Narsapur's famed hand-made crochet industry produces doilies, pillow covers, cushion covers, bed spreads, table-runners and tablecloths etc.
  नरसापुर का प्रसिद्ध हाथ से बना क्रोशिया उद्योग डोली, तकिया कवर, कुशन कवर, बेड स्प्रेड, टेबल–रनर और मेजपोश आदि का उत्पादन करता है।
- Many of these products are exported to markets in the USA, UK and France.
  इनमें से कई उत्पाद संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस के बाजारों में निर्यात किए जाते हैं।